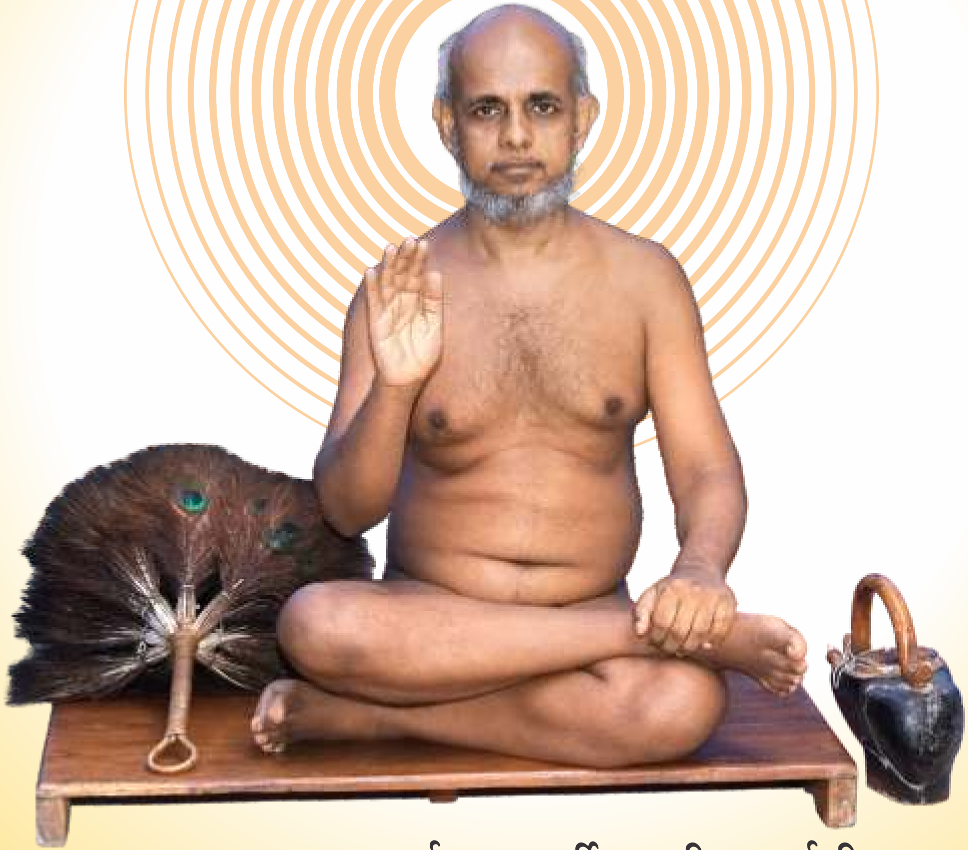

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

तीर्थंकर
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक:
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 445
ISBN-978-93-84003-54-8

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ
विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
द्वारा घोषित 'श्री गौतम गणधर वर्ष' 2014-15 के अन्तर्गत
स्वस्ति श्री पीठाधीश रवीन्द्र कीर्ति स्वामी के चतुर्थ पीठाधीश समारोह
मगसिर कृ. दसमी (17 नवम्बर 2014) के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, मगसिर कृ. दसमी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	17 नवम्बर 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में–कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी इन्हें यंत्र–मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय–समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट् कर्त्तव्य बताए हैं–

देवपूजा–गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म सार्थक होता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्र चन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 50 से अधिक विधान पूज्य माताजी के प्रकाशित हो चुके हैं और 50 विधान अभी अप्रकाशित हैं वे भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं। यह **'तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत विधान'** पूज्य माताजी ने रचकर प्रदान किया है। यह विधान सभी के जीवन में सभी विघ्नों को दूर करके सुख, शान्ति, समृद्धि को दिलाए यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकरों में से बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ हैं जिनका जन्म आज से 12 लाख वर्ष पूर्व राजगृही नगरी में हुआ था। इनके तीर्थकाल में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र बलभद्र और लक्ष्मण नारायण के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान चार कल्याणक हुए है। भगवान महावीर की प्रथम देशना राजगृही नगरी में विपुलाचल पर्वत पर खिरी थी। परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से राजगिरि में 12 फुट उत्तुंग मुनिसुव्रतनाथ की खड्गासन प्रतिमा दिगम्बर जैन लालमन्दिर के प्रांगण में कमलमन्दिर में सन् 2003 में पंचकल्याणक होकर विराजमान हो चुकी हैं।

विधानों की श्रृंखला में यह **'तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'** भी चमत्कारिक विधान है क्योंकि भगवान मुनिसुव्रतनाथ शनि ग्रह नाशक के रूप में भी माने गए हैं। इस विधान को करने से जन्मकुण्डली में दृष्टिगत क्रूर से क्रूर शनिग्रह की बाधा दूर होती है। यदि कभी शनिवार को अमावस तिथि आ जावे, तब विशेषरूप से इस विधान को करने से शनिग्रह से होने वाले संकट समाप्त होते हैं।

इस विधान में सर्वप्रथम श्री मुनिसुव्रतनाथ की वन्दना है फिर अर्हंत पूजा है। इसके बाद तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ की पूजा, उनके पंचकल्याण के अर्घ्य हैं। फिर अड़तालिस विध संकट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ के 48 अर्घ्य हैं जो कि बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं, जिन्हें पढ़कर अर्घ्य चढ़ाने से अनेक प्रकार के संकट दूर होते हैं–

जो प्राण को भी घातती कैंसर महाव्याधी।
अति कष्टदायी वेदना से हो न समाधी।।
तब भक्त आप मंत्र को जपते जो भाव से।
सब वेदना व व्याधि भी भगती है देह से।।

इन 48 अर्घ्य के बाद 108 मंत्रों के 108 अर्घ्य हैं फिर जयमाला है। जयमाला के बाद प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री

मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र पूजा एवं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मंत्र और यंत्र है। जिसका आप प्रयोग करके स्वस्थला, शान्ति और आर्थिक लाभ की प्राप्ति कर सकते हैं।

भगवान मुनिसुव्रत जन्मभूमि राजगृही तीर्थ की पूजा भी इसमें दी गई है। अंत में भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती एवं राजगृही तीर्थ की आरती है।

इस विधान में कुल 3 पूजा, अर्घ्य 48 + 108 = 156 अर्घ्य, 2 पूर्णार्घ्य एवं तीन जयमाला है। इस विधान को एक दिन में 2-3 घंटे में पूर्ण कर सकते हैं।

यह विधान सभी के जीवन में रोग, शोक को दूर कर सुख, शान्ति समृद्धि को प्रदान करे यही मंगल भावना है पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें जिनेन्द्रदेव से यही मंगल कामना है।

दो शब्द

–आर्यिका स्वर्णमती

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 400 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम है।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचन्द्रिका'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ–साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिन में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

विधानों की श्रृंखला में यह **'तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ विधान'** चमत्कारिक विधान है। इस विधान को करने से शनि ग्रह की बाधा दूर होती है और स्वस्थता प्राप्त होती है।

पूज्य माताजी के ज्ञानगुण की पूजा करते हुए मैं यही भावना करती हूँ कि पूज्य माताजी के गुण मुझमें अवतरित हों। यह विधान मेरे जीवन में श्रुतज्ञान को प्राप्त करावे, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. वंदना	1
2. श्री अर्हंत पूजा	3
3. तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा	8
4. पंचकल्याणक के अर्घ्य	10
5. अड़तालिस विध संकट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ के 48 अर्घ्य	11
6. 108 मंत्रों से अर्घ्य	22
7. जयमाला	32
8. प्रशस्ति	34
9. शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र पूजा	35
10. शनिग्रहारिष्ट निवारक मंत्र	39
11. भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि राजगृही तीर्थ पूजा	40
12. भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती	46
13. राजगृही तीर्थ की आरती	47

मण्डल विधान का नक्शा

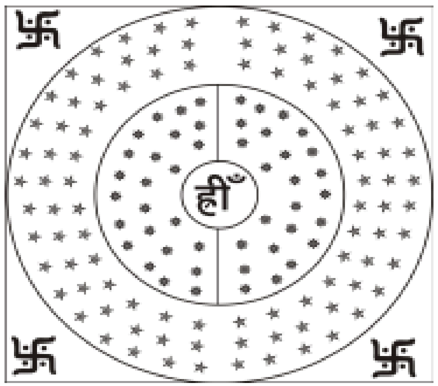

प्रथम वलय में–48 अर्घ्य

द्वितीय वलय में–108 अर्घ्य

कुल अर्घ्य–48 + 108 = 156

पूर्णार्घ्य–2

जयमाला–3

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

वंदना

महाव्रतधरो धीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
नमस्तुभ्यं प्रदद्यान्मे, रत्नत्रयपूर्णताम्।।1।।

–शंभु छंद –

मुनिसुव्रत! सुव्रत के दाता, भव हर्ता मुक्ति विधाता हो।
मैं नमूँ तुम्हें मेरे स्वामी, मुझको भी सिद्धि प्रदाता हो।।
वह राजगृही नगरी धन है, त्रैलोक्य गुरू यहाँ थे जन्में।
हैं धन्य सुमित्र पिता माता, सोमा भी धन्य हुईं जग में।।1।।

श्रावण वदि दूज गर्भ बारस[1], वैशाख वदी में जन्म लहा।
बैशाख वदी दशमी नवमी, क्रम से दीक्षा औ ज्ञान लहा।।
अस्सी कर तुंग शरीर कहा, प्रभु नील वर्ण अतिशय सुन्दर।
थी तीस हजार वर्ष आयु, कच्छप[2] के चिन्ह से जानें नर।।2।।

१. कल्याणमाला। २. कछुआ।

फाल्गुन वदि बारस को गिरि पर, प्रभु ने सब कर्म विनाशा था।
सुरगण ने आकर के तत्क्षण, शिव हेतु नमाया माथा था।।
भगवन्! मैं वर्ण स्पर्श गंध, औ रस से रहित अरूपी हूँ।
बस तव भक्ती से व्यक्ती हो, मैं एक स्वयं चिद्रूपी हूँ।।3।।

हे देव! तुम्हारी भक्ती का, फल एक यही बस मिल जावे।
प्रतिदिन प्रतिपल अंतिम क्षण तक, तव नाम मंत्र जिह्वा गावे।।
नहिं पीड़ा हो नहिं हों कषाय, बस कंठ अकुंठित बना रहे।
हे नाथ! तुम्हारे चरणों की, भक्ती में ही मन रमा रहे।।4।।

अथ श्रीजिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा

–अथ स्थापना (नरेंद्र छंद) –

श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, चरण कमल शिर नाऊँ।
व्रत संयम गुण शील प्राप्त हों, यही भावना भाऊँ।।
मुनिगण महाव्रतों को पाकर, मुक्तिरमा को परणें।
हम भी आह्वानन कर पूजें, पाप नशें इक क्षण में।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (बसंततिलका छंद) –

सरयू नदी जल भरा कनकाभ झारी।
धारा करूँ त्रय जिनेश्वर पाद में मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर संग घिस चंदन गंध लाया।
पादारविंद प्रभु के चर्चूं अभी मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धारूँ।
मेरा अखंड पद नाथ! मुझे दिला दो।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब सुरभी करते दशों दिक्।
पादारविंद प्रभु के अर्पण करूँ मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी सुहाल गुझिया बरफी बनाके।
हे नाथ! अर्पण करूँ क्षुध रोग नाशे।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान चमके।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सु अग्नि में मैं।
संपूर्ण कर्म झट भस्म बने न दुःख दें।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार वर द्राक्ष बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें सब मनोरथ पूर्ण कीजे।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ्य भर थाल चढ़ाय देऊँ।
मेरा अनर्घ्य पद नाथ! मुझे दिला दो।।

वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम राज्य, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
मिले सर्व सुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

–रोला छंद –

पिता सुमित्र नरेश, राजगृही के शास्ता।
सोमावती के गर्भ, बसें जगत शिर नाता।।
श्रावण कृष्णा दूज, इन्द्र जजें पितु माँ को।
जजूँ गर्भ कल्याण, मिले आत्मनिधि मुझको।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, वदि वैशाख दुवादश।
इन्द्र लिया शिशु गोद, पहुँचे पांडुशिला तक।।
एक हजार सुआठ, कलशों से नहलाया।
जजत जन्म कल्याण, पुनि पुनि जन्म नशाया।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण निमित्त, वदि वैशाख सुदशमी।
अपराजिता पालक्कि, नीलबाग में प्रभुजी।।

सिद्धं नमः उचार, स्वयं ग्रही प्रभु दीक्षा।
नमूँ नमूँ शत बार, मिले महाव्रत दीक्षा।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक तरु तल नाथ, वदि वैशाख नवमि के।
केवलज्ञान विकास, समवसरण में तिष्ठे।।
श्रीविहार में चरण, तले प्रभु स्वर्ण कमल थे।
नमूँ नमूँ नतमाथ, ज्ञान कल्याणक रुचि से।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद सुशैल, फाल्गुन वदि बारस में।
किया मृत्यु को दूर, मुक्तिरमा ली क्षण में।।
नमूँ मोक्ष कल्याण, कर्म कलंक नशाऊँ।
मुनिसुव्रत भगवान, चरणों शीश झुकाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अड़तालिसविध संकट निवारक मुनिसुव्रतनाथ के 48 अर्घ्य

दोहा

वर्तमान के बहुत विध, कष्ट स्वयं हो दूर।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भरपूर।।1।।

अथ प्रथमवलये मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शेर छंद

जब मेघ अतीवृष्टि से भू जलमयी करें।
नदियों की बाढ़ में बहें जन डूबकर मरें।।

जो भक्त आप पूजतें वे पुण्य योग से।
अतिवृष्टि अपने देश से वे दूर कर सकें।।1।।

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं मेघ बरसते सभी जल के लिये तरसें।
पशु पक्षी मनुज प्यास से निज प्राण को तजें।।
मुनिसुव्रतनाथ आप की पूजा ही मेघ सम।
अमृतमयी जलवृष्टि से तर्पित करें जन मन।।2।।

ॐ ह्रीं अनावृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भिक्ष हो अकाल हो असमय में जन मरें।
भगवन्! तुम्हारी भक्ति से जन पाप परिहरें।।
होवे सुभिक्ष सब तरफ जब पुण्य घट भरें।
तब मेघ भी समय समय वर्षा सुखद करें।।3।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनाशनकराय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन से भरी तिजोरियाँ ताले लगा दिये।
डाकू लुटेरे चोर आये लूट ले गये।।
बहु श्रम से कमाया गया धन हानि जो होती।
प्रभु भक्ति से हानी न हो धन रक्षणा होती।।4।।

ॐ ह्रीं चोरलुंटकादि-उपद्रवनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो राज्यकर के हेतु ही अधिकारी राज्य के।
छापा या टैक्स आदि से धन लूट ले जाते।।
इस विधि से राज्य भय से घिरें निर्धनी बनें।
प्रभु के चरणकमल भजें फिर से धनी बनें।।5।।

ॐ ह्रीं आयकरादिराज्यभयोपद्रवनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार श्रम करें फिर भी न धन बढ़े।
दारिद्र से उन सामने संकट बड़े बड़े।।
परिवार के पोषण में भी असमर्थ हो रहें।
मुनिसुव्रत पूजा करें धन सम्पदा लहें।।6।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदुःखविनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु में ज्वरादि रोग हो पीड़ाएँ हों घनी।
बहु औषधि लेते भी व्याधियाँ हो चौगुनी।।
भगवान मुनिसुव्रत की अर्चना करें।
ज्वर शूल आदि रोग को वे क्षण में परिहरें।।7।।

ॐ ह्रीं ज्वरशूलरोगादिनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पीलिया कुष्ठादि जलोदर भगंदरा।
नाना प्रकार रोग शोक हों भयंकरा।।
तुम नाम के जपे समस्त रोग नष्ट हों।
हे नाथ! आप भक्ति से जन पूर्ण स्वस्थ हों।।8।।

ॐ ह्रीं कामलाकुष्ठजलोदरभगंदरादिव्याधिनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध के नेत्र रोग हों अंधा करें यदि।
औषधि व शल्य चिकित्सा से हो न लाभ भी।
ऐसे समय में जो मनुष्य प्रभु शरण गहें।
हो नेत्र ज्योति स्वच्छ मन प्रसन्नता लहें।।9।।

ॐ ह्रीं नानाविधनेत्ररोगविनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्राण को भी घातती कैंसर महाव्याधी।
अति कष्टदायी वेदना से हो न समाधी।।

तब भक्त आप मंत्र को जपते जो भाव से।
सब वेदना व व्याधि भी भगती हैं देह से।।10।।

ॐ ह्रीं प्राणघातिकैंसरमहाव्याधिविनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय रोग से पीड़ित मनुज न पावते साता।
बहुधन करें खर्चा परन्तु बढ़ती असाता।।
जिनराज पादकमल की लेते यदि शरण।
हों पूर्ण स्वस्थ नहीं हो अकाल में मरण।।11।।

ॐ ह्रीं हृदयरोगपीड़ानिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों की जो निन्दा करें घृणा करें कभी।
वे हों कुरूप निंद्यरूप पावते तभी।
मन में सदा दुःखी रहें यदि आप को यजें।
होवें सुरूप कामदेव सर्वसुख भजें।।12।।

ॐ ह्रीं कुरूपादिकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छन्द

स्त्री पुत्रादि स्वजन परिजन, जो अपने को अतिप्रिय होवें।
वे दूर बसें या मर जावें, तब इष्ट वियोग दुःखद होवे।।
उस समय चित्त संतप्त किये, रोते विलाप करते प्राणी।
होते प्रसन्न क्षण भर में ही, यदि मिल जावे प्रभु की वाणी।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक-इष्टवियोगजदुःखनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु हों या प्रतिकूल स्वजन, भार्या आदिक शत्रुसम हों।
इनका वियोग कैसे होवे, ऐसी चिन्ता प्रतिक्षण मन हो।।

ऐसे अनिष्ट संयोगों से, संतप्त हृदय प्रतिदिन रोवे।
जिनवर की पूजा करने से, निश्चिन्त प्रसन्नमना होवें।।14।।

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगमहादुःखशातनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर में या व्यापारों में भी, मन के प्रतिकूल क्रियायें हों।
मानस पीड़ा होवे प्रतिदिन, आकुलता हो व्याकुलता हो।।
प्रतिक्षण मन पीड़ा से तनु में, नानाविध रोग प्रगटता हो।
प्रभु की पूजा से आधि नशे, मन में अतिशय प्रफुल्लता हो।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वमानसिकताविनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से प्रिय भी वचन कहें फिर भी जन-जन अति क्रोध करें।
या जिह्वा में हो रोग विविध या गूँगे हों बहु दुःख भरें।।
इस विधि वाचनिक कष्ट जो भी नश जाते प्रभुवर भक्ति से।
वचनसिद्धि मिले सब जन वश हों, पूजा का फल मिलता विधि से।।16।।

ॐ ह्रीं सर्ववाचनिककष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुद्गल के परमाणु से निर्मित है काया अस्थिर है।
फिर भी इसमें कुछ पीड़ा हो आत्मा भी होता अस्थिर है।।
नानाविध कायिक कष्टों से छुटकारा पाते भाक्तिक जन।
हे नाथ! आपकी पूजा से सब मिट जाते जग के क्रन्दन।।17।।

ॐ ह्रीं नानाविधकायिककष्टशातनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वायुयान से गगन गमन करते ऊपर में उड़ जाते।
यदि अकस्मात् दुर्घटना हो ऊपर से नीचे गिर जाते।।
प्रभु नाम जपें तत्क्षण ही तब तनु में किंचित् नहीं चोट लगे।
मरणान्तक पीड़ा से बचते, दीर्घायु हों दुःख दूर भगें।।18।।

ॐ ह्रीं सर्ववायुयानदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रेल में बैठे अतिशीघ्र बहुतेक कोश यात्रा करते।
यदि एक्सीडेंट आदि होवे तो आकस्मिक मृत्यु लभते।।
जिनराज भक्ति का ही प्रभाव ऐसी बहुविध दुर्घटनाओं में।
परिपूर्ण सुरक्षित बच जाते, या एक्सीडेंट टलें क्षण में।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वलोहपथगामिनीदुर्घटनादिभयनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस कार आदि यात्रा साधन सुख देते आज सभी को भी।
संघट्टन आदि बहुत विध की दुर्घटनाएँ होती हैं फिर भी।।
यदि नाम मंत्र जपते उस क्षण दुर्घटना से बच जाते हैं।
यदि मरें कदाचित् फिर भी वे शुभ स्वर्ग सौख्य पा जाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिकादुर्घटनादिसंकटमोचनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चलें तिपहिए, वाहनादि, उनके संघट्टन आदि विविध।
गिरने पड़ने से एक्सीडेंट, आदिक दुर्घटनाओं से नित।।
नाना आतंक दिखें जग में, प्रभु भक्ती से टल जाते हैं।
सब विध अकालमृत्यु टलती, भाक्तिक दुःख से बच जाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनादिकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो पहिये के साइकिल आदिक, वाहन से चलते अकस्मात्।
बस ट्रक आदिक के टक्कर से, गिर जाते बहुविध कष्ट प्राप्त।।
प्रभु नाम मंत्र के जपते ही, किंचित् नहिं चोट लगे तन में।
अपमृत्यु आदि भय टल जाते, मानव दीर्घायु हों जग में।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनातंकनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूपर भूकंप कभी होता, बहुतेक मनुज मर जाते हैं।
घर ग्राम आदि भी नश जाते, बहुते पशु भी मर जाते हैं।।

प्राकृतिक कोप भूकम्प आदि दुर्घटनाएँ भी टल जाती हैं।
जो भक्त आपको जजते हैं, उनकी रक्षा हो जाती है।।23।।

ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटनानिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदियों में बाढ़ यदि आवे, कितने ही ग्राम डूब जाते।
कितने नर नारी पशु पक्षी, जल में डूबे तब मर जाते।।
इन आकस्मिक जल संकट से, भाक्तिक जन ही बच सकते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु का ही प्रभाव, ये संकट भी टल सकते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं नदीपूरप्रवाहसंकटमोचनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नदी, समुद्र, नहर आदिक, में अकस्मात् गिर जाते हैं।
तुम नाम मंत्र जपते तत्क्षण, वे सहसा ही तिर जाते हैं।।
जिनदेव भक्ति की महिमा ही, भवसागर भी तिर सकते हैं।
प्रभु मुनिसुव्रत की भक्ती से, हम भी सब संकट हरते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं नदीसमुद्रादिपतनकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू आदिक विषधर जंतु, सर्पादिक काले नाग यदी।
हालाहल विष उगले डस लें, नहिं बचा सकें कोई वैद्य यदी।।
ऐसे भय यदी भयंकर भी, जीवन नाशक आ जाते हैं।
मुनिसुव्रत जिनकी भक्ती से, निर्विष हो जीवन पाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं वृश्चिकसर्पादिविषधरविषनिर्णाशनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टापद व्याघ्र सिंह आदिक, हिंसक पशुओं ने घेरा हो।
जीवन बचने की आश न हो, संकट का घोर अंधेरा हो।।
भय से भयभीत हुए प्राणी, यदि नाममंत्र प्रभु का जप लें।
तत्क्षण ही क्रूर जन्तुगण भी, शांति भावों से मिलें जुलें।।27।।

ॐ ह्रीं अष्टापदव्याघ्रसिंहादिक्रूरहिंसकजंतुभयनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथी, घोड़े, गौ, बैल आदि पशुगण यदि हमला करते हैं।
सींगों वाले भयभीत करें, दौड़ें मारें वध करते हैं।।
ऐसे प्राणीमात्र से भी नर, नहिं बाधा किंचित् पाते हैं।
जो मन में चिंते प्रभूमंत्र, वे निर्भय हो बच जाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादिप्राणिगणभयविनाशकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच छंद

जो विषाक्त गैस फैलती शरीर नाशती।
मानवों पशुगणों के प्राण को संहारती।।
श्री जिनेन्द्रदेव के पदाब्ज की समर्चना।
सर्व गैस आदि कष्ट दूर होयं रंच मा।।29।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादिसंकटनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज जो रसोईघर में गैसपात्र जल रहे।
जो कभी फटें व अग्नि से अनेक को दहें।।
प्राण कष्टदायी चुल्लिकादि दुःख वारते।
जो जिनेन्द्र को जजें समस्त पाप टारते।।30।।

ॐ ह्रीं वाष्पचुल्लिकादिदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज बम फटें कहीं अनेक प्राणी मारते।
आत्मघाति लोग भी अनेक को संहारते।।
ग्राम सद्म भी बड़े बड़े ही बम गिरे नशें।
आप पाद पूजते समस्त आपदा नशें।।31।।

ॐ ह्रीं बमविस्फोटकादि-आकस्मिकसंकटनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रवादि लोग आज मानवों को मारते।
बेकसूर प्राणियों के प्राण को संहारते।।

मानसीक वेदना धरें अनेक नित्य ही।
नाम मंत्र आप का हरे अनेक भीति ही।।32।।

ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत्–आकस्मिकमरणादिभयविनाशकाय श्रीमुनि–सुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज जो दहेज की प्रथा महान घातिनी।
बालिकाओं का जनम हुआ है कष्ट की खनी।।
भारभूत जन्म भी सुधन्य धन्य लोक में।
आप नाम के जपे अपूर्व सौख्य दे घने।।33।।

ॐ ह्रीं बालिकाजन्मकष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानसिक कष्ट देह व्याधि आदि दुःख से।
कूप में गिरें विषादि खाय के मरा चहें।।
तुच्छ योनि हेतु आत्मघात है सुबुद्धि हो।
आप नाम के जपे हि पूर्ण आयु लाभ हो।।34।।

ॐ ह्रीं कूपनदीपतनविषादिभक्षणनिमित्तापघातभावनिवारणाय श्रीमुनि–सुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु हो अकाल में न पूर्ण आयु पा सकें।
कर्म की उदीरणा से बहुविधे निमित्त बनें।।
नाथ पाद को जजें अपूर्व पुण्य को भरें।
दीर्घ आयु हो यहाँ समस्त कष्ट को हरें।।35।।

ॐ ह्रीं नानाविधदुर्घटनादिकालमृत्युनिवारणाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत औ पिशाच व्यंतरादि कष्ट दें घने।
डाकिनी व शाकिनी ग्रहादि भी निमित्त बनें।।
दुःख हो पिशाचग्रस्त आप वश्य ना रहें।
नाथ पाद पूजते समस्त कष्ट को दहें।।36।।

ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादिबाधानिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोल छन्द

किंचित् श्रम से धन ही धन हो, सब व्यापार सफल होते।
पुण्य उदय से हों उद्योगपति, सब जन–जन के प्रिय होते।।
जिन पूजा का ही माहात्म्य, जो धन से घर भण्डार भरें।
भाक्तिक जन प्रभु पूजा कर, शीघ्र स्वात्मनिधि प्राप्त करें।।37।।

ॐ ह्रीं बहुविधव्यापारसफलताकारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृहलक्ष्मी अनुकूल रहे, पतिव्रत से घर को मोहे।
पति की अनुगामी बन करके, दान धर्म से नित सोहे।।
ऐसी पत्नी मिलती जिसको, वे पुण्यात्मा कहलाते।
मुनिसुव्रत प्रभु पूजा का फल, इस भव परभव में पाते।।38।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासिनीधर्मपत्नीप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीमुनि–सुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र पौत्र संतति मिलती नित, कुलदीपक संतान मिले।
मात पिता की कीर्ति बढ़ाकर, धर्मनिष्ट हों स्वस्थ भले।।
भरत, बाहुबलि, राम सदृश सुत, ब्राह्मी सीता सम कन्या।
मुनिसुव्रत तीर्थंकर को नित, पूजत पाते जगवंद्या।।39।।

ॐ ह्रीं पुत्रपौत्रादिकुलदीपकसंततिप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ–तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ आयु पाते वे भविजन, जो प्रभु चरण कमल जजते।
अशुभ भाव से दूर रहें नित, जिनवर के गुण में रमते।।
मनुज देव योनी को पाते, सम्यग्दर्शन महिमा से।
अतः जजूँ मैं भक्तिभाव से, उत्तम आयु मिले जिससे।।40।।

ॐ ह्रीं दीर्घायुप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों ओर फैलती कीर्ति, सद्गुण से निज को भरते।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से आत्मा को शोभित करते।।

कई जन्म के पुण्य योग से, ऐसा योग सुलभ होवे।
मुनिसुव्रत की पूजा करते, यश सौरभ प्रसरित होवे।।41।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिककीर्तिसौरभव्यापकपुण्यप्रापकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजमान्यता प्राप्त करें सब, जन जन के अति प्रिय होते।
सब जन उनके गुण गाते ऐसी महिमा से खुश होते।।
जिनवर भक्ती का प्रभाव यह, सब जन संतर्पित करते।
और अधिक क्या जिनभक्ति से, तीर्थंकर भी बन सकते।।42।।

ॐ ह्रीं राज्यमान्यतादिप्रशंसनगुणप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन जन भी आज्ञा पालें, ऐसी गरिमा को पाते हैं।
इस भव में इन्द्रादि सदृश, अतिशायी वैभव पाते हैं।।
ये सब मुनिसुव्रत पूजन का, उत्तम फल जग में माना।
भक्त बने भगवान स्वयं, ऐसा आश्चर्य जगत जाना।।43।।

ॐ ह्रीं आज्ञापालनविभवप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत समय में रोग वेदना, आर्तरौद्र दुर्ध्यान न हों।
क्रोध मान माया लोभादिक, राग द्वेष दुर्भाव न हों।।
देव शास्त्र गुरु पंचपरम गुरु इनका ही बस ध्यान प्रभो।
महामंत्र का मनन श्रवण हो, अंत समाधी मरण प्रभो।।44।।

ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधिमरणफलप्रदाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण ये, रत्नत्रय शिवदाता हैं।
निश्चय औ व्यवहार मार्ग ये, परमानन्द विधाता हैं।।
मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभु की, भक्ति करें जो भव्य सदा।
वे ही तीन रत्न पा लेते, त्रिभुवन लक्ष्मी लें सुखदा।।45।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयरत्नत्रयप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा सुमार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप भी।
त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य ये, दशवर धर्मधरें यति ही।।
इन धर्मों को पाते वे ही, जो जिनपूजा नित करते।
मुनिसुव्रत के चरणकमल की, भक्ति से शिवपद लभते।।46।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशधर्मप्रदायकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि विनय आदि, सोलह सुभावना मानी हैं।
तीर्थंकर पद की जननी ये, सर्वश्रेष्ठ जिनवाणी हैं।।
तीर्थंकर पदकमल चर्चते, सदा भावना भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधे, त्रिभुवनपति बन जाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिसोलहकारणभावनाफलप्रदाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरात्मा अन्तरात्मा परमात्मा जीव त्रिविध मानें।
स्वपर भेदविज्ञानी मुनिवर, शुद्धात्मा को पहचानें।।
सतत ध्यान कर शुद्ध बनें वे, जो जिनचरणकमल षट्पद।
निजशुद्धात्मतत्त्वप्राप्ती हितु, मैं भी नित्य जजूँ जिनपद।।48।।

ॐ ह्रीं अन्तरात्मस्वरूपनिजशुद्धात्मध्यानकारिपदप्रदाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

अतिवृष्टि अनावृष्ट्यादि कष्ट, जो मानव को दुःख देते हैं।
श्री मुनिसुव्रत की पूजा से, भविजन सब दुःख को मेटे हैं।।
नीरोग बनें दीर्घायु हों, सब सुख सम्पत्ति भर लेते हैं।
यह जिनपूजन का ही प्रभाव, बहुयश सौरभ को देते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि-अनावृष्ट्यादि-विविधसंकटनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

108 मंत्रों से अर्घ्य

–दोहा –

प्रभु अनंतगुण के धनी, मुनिसुव्रत भगवान।
मंत्र एक सौ आठ से, पूजूँ सौख्य निधान।।1।।

अथ द्वितीयवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं त्रिलोक-त्रिकालवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायात्मकवस्तुस्वरूपज्ञायकाय सर्वज्ञनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वचराचरजगद्वित्ज्ञानप्रदाय सर्वविन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनावलोकनसमर्थदर्शनप्रापणकराय सर्वदर्शिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यदर्शनसमर्थनेत्रसहिताय सर्वावलोकननामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं मुक्तिपथाचरणशक्तिप्रदाय अनवधिपराक्रमसहिताय अनन्तविक्रमनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलप्रदानसमर्थाय अनन्तवीर्यनामालंकृताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखप्रदाय अनन्तसुखात्मकनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसुखप्रापणशक्तिप्रदाय अनन्तसौख्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं समस्तविश्वज्ञातृशक्तिप्रदाय विश्वज्ञनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं अखिलजगदावलोकनसमर्थयुक्तिप्रदाय विश्वदृश्वन्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं समस्तपदार्थावलोकनदृष्टिधारकाय अखिलार्थदृङ्नामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियसाहाय्यमन्तरेण सर्वलोकालोकावलोकनसमर्थाय न्यक्षदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदर्शनचक्षुर्भ्यां सर्वविश्वावलोकनसमर्थाय विश्वतश्चक्षुर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वजगदावलोकनदर्शनप्रदाय विश्वचक्षुर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकालोकज्ञायकाय अशेषविन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियसौख्यसागरनिमग्नाय आनंदनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टसौख्यप्रदानसमर्थाय परमानन्दनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वकालोदयास्तमनविरहितसौख्यमंडिताय सदानन्दनाम-विभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टाभ्युदयप्रदानसमर्थाय सदोदयनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं शाश्वतसौख्यप्रदायकाय नित्यानन्दनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया महानन्दप्रदायकाय महानन्दनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं भक्तानां चरणपूजया उत्कृष्टानन्दप्रदायकाय परानन्दनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं परमोत्कृष्टज्ञानोदयप्रदायकाय परोदयनामालंकृताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं अतिशयकारि-उत्साहप्रदायकाय परमोजनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टभास्करप्रकाशरूपसमन्विताय परंतेजोनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टधामप्रापणसमर्थाय परंधामनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं परमतेजःस्वरूपसमन्विताय परंमहोनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं कोटिरविप्रभालज्जितकरणभामंडलविभवप्राप्ताय प्रत्यग्ज्योतिर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं लोकालोकलोचनोत्कृष्टनेत्रसमन्विताय परंज्योतिर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पंचमज्ञानस्वरूपाय परंब्रह्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं रहस्यमयात्मतत्त्वोपदेशनकराय परंरहोनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टबुद्धिप्रदायकाय प्रत्यगात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रदानकरणसमर्थाय प्रबुद्धात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमहसा लोकालोकव्यापकाय महात्मनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामोदयविभूतिसमन्विताय आत्ममहोदयनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टकेवलज्ञानप्रदायकाय परमात्मनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं घातिकर्मक्षयकरणबुद्धिप्रदाय प्रशान्तात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपेताय परात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं शरीरस्वरूपपरनिवासविरहितात्मगृहनिवासबुद्धिप्रदाय आत्मनिकेतननामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं इन्द्रधरणेन्द्रनरेन्द्रगणीन्द्रादिवंदितपदस्थिताय परमेष्ठिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं अतिशाय्यात्मस्वरूपसमन्विताय अष्टमीभूमिस्थिताय महिष्ठात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं अतिप्रशस्तकेवलज्ञानापेक्षासर्वव्यापकाय श्रेष्ठात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं निजशुद्धबुद्धैकस्वरूपात्मस्थिताय स्वात्मनिष्ठितनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयब्रह्मस्वरूपात्मस्थिताय ब्रह्मनिष्ठनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टयथाख्यातचारित्रस्थिताय महानिष्ठनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनप्रसिद्धात्मस्वरूपाय निरूढात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं निश्चलस्वरूपानन्तबलोपेतसत्तामात्रावलोकनसमर्थदृक्समन्विताय दृढात्मदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं एकाद्वितीयकेवलज्ञानलक्षणोपलक्षितविद्यासमन्विताय एकविद्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं महतीकेवलज्ञानविद्याप्रदायकाय महाविद्यनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मरूपमोक्षपदस्वामिने महाब्रह्मपदेश्वरनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पंचविधज्ञानप्रदाय पंचपरमेष्ठिगुणविभूषिताय पंचब्रह्ममयनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं सर्वप्राणिनां हितैषिणे सार्वनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्यानां स्वामिने सर्वविद्याप्रदाय सर्वविद्येश्वरनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं समवसरणलक्षणास्थानप्राप्ताय स्वभूनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गे बुद्धिस्थिरीकरणाय अनन्तधीनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतकेवलज्ञानोपलक्षिताय अनन्तात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं अनन्तशक्तिप्रदाय अनन्तशक्तिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनप्रापणबुद्धिदायकाय अनन्तदृङ्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं अनवधिबुद्धि-शक्तिप्रदाय अनन्तानंतधीशक्तिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानचिज्ज्योतिःप्रदाय अनन्तचिन्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं अनवधिसुखकारकाय अनन्तमुद्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं अखंडप्रकाशपुंजप्रदायकाय सदाप्रकाशनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं सर्वद्रव्यगुणपर्यायप्रत्यक्षकरणशक्तिप्रदाय सर्वार्थसाक्षात्कारिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं समस्तज्ञेयप्रमाणबुद्धिधारणसमर्थाय समग्रधीनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पुण्यपापरूपकर्मज्ञायकाय कर्मसाक्षिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनस्थितप्राणिनां लोचनसदृशज्ञायकाय जगत्चक्षुर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थमुनीनामदृश्यस्वरूपाय अलक्ष्यात्मनामसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं अस्मादृशानां दृढचारित्रप्रदाय निश्चलस्थानप्राप्ताय अचलस्थितिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं सर्वबाधाविरहितपदप्रदाय निराबाधनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थजनचिंतनविरहिताय अप्रतर्क्यात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं सहस्रारदेदीप्यमान-जगज्जनसंतापशान्तकरणसमर्थाय धर्मचक्रप्राप्ताय धर्मचक्रिनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्वज्जनश्रेष्ठपदप्रदाय विदांवरनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं लोकालोकस्वरूपज्ञायकाय भूतात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं स्वाभाविकज्ञानज्योतिःप्रदाय सहजज्योतिर्नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशज्योतिःप्रदाय विश्वज्योतिर्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोविरहितज्ञानप्रदाय अतीन्द्रियनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रापणकराय केवलिनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानप्रकाशप्रदाय केवलालोकनामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशज्ञानप्रदाय लोकालोकविलोकननामविभूषिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं सर्वविषयेभ्यः पृथग्भूताय विविक्तनामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं असहायज्ञानप्रदायकाय केवलनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-

नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमनोऽगोचरपददायकाय अव्यक्तनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं अर्तिमथनसमर्थाय सर्वजनशरणप्रदाय शरण्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं साधारणजनमनोऽगोचरवैभवप्रदाय अचिन्त्यवैभवनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं अखिलविश्वजनतापोषणसमर्थाय विश्वभृद्नामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकिरणैस्त्रैलोक्यव्याप्ताय विश्वरूपात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं विश्वस्थितप्राणिगणनिजसदृशावलोकनदक्षाय विश्वात्मनाम-समन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेन लोकालोकव्यापकाय विश्वतोमुखनामप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रदेशैर्लोकपूरणसमुद्घातकाले विश्वव्यापकाय विश्व-व्यापिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं आत्मज्योतिःस्वरूपभास्कराय स्वयंज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं अवाङ्मानसगोचरस्वरूपप्रदाय अचिन्त्यात्मनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर-कोटिचन्द्रसमानशरीरतेजःसमन्विताय अमितप्रभ-नामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं वाञ्छितफलप्रदायकदानशक्तिसमन्विताय महौदार्यनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्राप्तिस्वरूपबोधिप्रदाय महाबोधिनामधारकाय श्रीमुनि-सुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिस्वरूपलाभदायकाय महालाभनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरनामकर्मोदयसहिताय महोदयनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं सच्छत्रचामरसिंहासनाशोकतरुप्रमुखमुहुर्भोग्यसमवसरणादि-लक्षणविभवसहिताय महोपभोगनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं शोभनबुद्धिकेवलज्ञानस्वरूपाय सुगतिनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रत-नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टि-पुष्पवृष्टिशीतलमृदुसुगंधवातादिलक्षणभोग्य-वस्तुसमन्विताय महाभोगनामधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं समस्तवस्तुपरिच्छेदलक्षणानन्तवीर्यसहिताय महाबलनाम-धारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिपरिभ्रमणमूलकारणमोहनीयकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तगुणसमुद्रनिमग्नाय सम्यक्त्वनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रत-नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय समस्तलोकालोकाव-लोकनसमर्थाय दर्शननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय युगपत्समस्तलोका-लोकप्रत्यक्ष–करणसमर्थाय ज्ञाननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तशक्तिसमन्विताय वीर्यनाम–प्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं नामकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय ज्ञानकिरणैः समस्तसंसारव्याप्ताय सूक्ष्मत्वनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं आयुःकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तानन्तसिद्धावगाहनप्रदान-समर्थाय अवगाहननामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मनाशनबुद्धिप्रदाय अनन्तानन्तकालनिजात्मविश्राम-कारणस्वरूपाय अगुरूलघुनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मक्षपणयुक्तिप्रदाय परमातीन्द्रियसौख्यसागरनिमग्नाय अव्याबाधनामप्रमुखगुणमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

–पूर्णार्घ्य –

तर्ज-हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.......

हे नाथ! तुम्हारी पूजा को, हम थाल सजाकर लाये हैं।
हे सुव्रतदाता मुनिसुव्रत! हम चरण शरण में आये हैं।।
शनिग्रह की बाधा दूर करो, यद्यपि यह ख्याति जगत में है।
फिर भी सब ग्रह बाधा विनशें, ऐसा यश सुन हम आये हैं।।1।।
हे नाथ!.............।
संपूर्ण अमंगल, रोग, शोक, दारिद्रादिक दुःख दूर भगें।
अपमृत्यु टले सुसमाधि मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।2।।
हे नाथ!.............।
संसार विपिन में जन्म मरण, करते करते हम श्रांत हुए।
परमानन्दामृत सुख की बस, अभिलाषा लेकर आये हैं।।3।।
हे नाथ!.............।

ॐ ह्रीं सर्वडाकिनी–शाकिनी–भूतपिशाचव्यन्तरदेवादिकृतोपद्रवविनाशन-समर्थाय सर्वज्ञादि–अव्याबाधगुणपर्यन्त–अष्टोत्तरशतनामसमन्विताय श्रीमुनि-सुव्रतनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य –**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय नमः।**

अथवा –**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय नमः।**

(108 बार सुगंधित पुष्प या लवंग या पीले चावल से जाप्य करें)

जयमाला

सोरठा – **श्रीमुनिसुव्रत देव, अखिल अमंगल को हरें।**
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।1।।

–सखी छंद –

जय जय जिनदेव हमारे, जय जय भविजन बहुतारे।
जय समवसरण के देवा, शत इन्द्र करें तुम सेवा।।2।।
जय मल्लि प्रमुख गणधरजी, सब अठरह गणधर गुरु जी।
जय तीस हजार मुनीश्वर, रत्नत्रय भूषित ऋषिवर।।3।।
जय गणिनी सुपुष्पदंता, पच्चास सहस संयतिका।
श्रावक इक लाख वहाँ पर, त्रय लाख श्राविका शुभ कर।।4।।
तनु अस्सी हाथ कहाओ, प्रभु तीस सहस वर्षायू।
कच्छप है चिह्न प्रभू का, तनु नीलवर्ण सुंदर था।।5।।
मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भविवृंद सुयश विस्तारें।
सुरनर किन्नर गुण गावें, किन्नरियाँ बीन बजावें।।6।।
भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधर गण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें।।7।।
भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागें, तिन देख मोहरिपु भागें।।8।।
जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं।।9।।
जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो! तुम पासे, मन के उद्‌गार निकासे।।10।।

जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूँ।।11।।
जब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधी।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक जिन ध्यान लगाऊँ।।12।।
तब तक तुमही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो।।13।।

–घत्ता –

जय जय तीर्थंकर, विश्व हितंकर, जय जय जिनवर वृष चक्री।
जय ''ज्ञानमती'' धर, शिव लक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धश्री।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य 'मुनिसुव्रतविधान', करें सदा अति चाव से।
वे शीघ्र ही संसार सागर, तिरें भक्ती नाव से।।
संसार के सब सौख्य पाकर, स्वात्मसंपति पावते।
'सज्ज्ञानमति' परमात्मपद, पाकर यहाँ नहिं आवते।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के चरण कमल में, झुक-झुक शीश नमाऊँ।
सरस्वती का वंदन करके, त्रिविध साधु गुण गाऊँ।।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मंगल कर्ता जग में।
पद्मप्रभु जिनवर विधान यह, रचा सौख्यकर मैंने।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय प्रसिद्ध हुआ है।
गच्छ सरस्वति बलात्कार गण, इसमें मान्य हुआ है।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर जी।
इनके प्रथम शिष्य पट्टाधिप, गुरू वीरसागर जी।।2।।

मुझे आर्यिका दीक्षा देकर, ज्ञानमती कर जग में।
ज्ञानामृत कण से पावन कर, सार्थक नाम दिया मे।।
तीर्थंकर भक्ती प्रसाद से, देव-शास्त्र-गुरु भक्ती।
मिली आत्मनिधि त्रिभुवन उत्तम, प्राप्त करन की शक्ती।।3।।

वीर संवत् पचीस सौ चालिस, पौष शुक्ल तेरस में।
मुनिसुव्रत जिनवर विधान की, रचना पूर्ण किया मैं।
महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
हस्तिनागपुर में सुमेरु सह, जम्बूद्वीप स्थिर हो।।4।।

तेरहद्वीप जिनालय रचना, तीर्थंकर त्रय जब तक।
गणिनी ज्ञानमती कृत रचना, जग में हो मंगलप्रद।।
धर्म अहिंसा परमो धर्मः, विश्व हितंकर होवे।
मुनिसुव्रत विधान तब तक ही, सर्वहितंकर होवे।।5।।

।।इति शं भूयात्।।

शनिग्रहारिष्ट निवारक
श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना-गीता छंद

मुनिसुव्रतेश जिनेन्द्र की, हम सब करें आराधना।
शनिग्रह अरिष्ट विनाश हेतू, भक्ति से हो साधना।।
शनिवार को प्रभु निकट में, विधिवत् करें यदि अर्चना।
तो सत्य ही दुख दूर होकर, पूर्ण होगी प्रार्थना।।1।।

-दोहा-

पूजा के प्रारंभ में, आह्वानन इत्यादि।
स्थापन सन्निधिकरण, की विधि कही अनादि।।2।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक-सोरठा

जल ले अमल सुस्वादु, धार करूँ जिनपदकमल।
शनिग्रह शान्ती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर लेय, चर्चूं श्री जिनपदकमल।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल अखण्ड, अर्पूं जिनवर पद निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला कुंद गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ प्रभु चरण।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, अर्पूं थाल भराय के।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति, मोहतिमिर को क्षय करे।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर की धूप, खेऊँ मैं जिनवर निकट।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ले मधुर रसाल, अर्पूं शिवफल प्राप्त हो।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ्य बनाय चरण चढ़ाऊँ चंदना।
शनिग्रह शांती हेतु, मुनिसुव्रत प्रभु को जजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक–श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

त्रयरोगों की शांति हित, धारा तीन करंत।
तीन रत्न यदि प्राप्त हों, भवदधि शीघ्र तरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, सुरभित पुष्प मंगाय।
जिनगुणसुरभि मिले मुझे, जिनवर चरण चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्णार्घ्य

तर्ज-हे वीर तुम्हारे..........

भगवान् तुम्हारी भक्ती से, भव के बन्धन खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।
इस ग्रह के कारण हे स्वामी!, तन धन की हानि सही मैंने।
सहने में हो असमर्थ नाथ, अब तुमसे व्यथा कही मैंने।।
यह सुना बहुत तुम चिन्तन से, अवरुद्ध मार्ग खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।1।।

नवग्रह में सबसे क्रूर शनी, इसको कर शान्त सुखी कीजे।
निजनाममंत्र की एक मणी, स्वामी अब मुझको दे दीजे।।
"चन्दनामती" इस युक्ती से, शिव के पथ भी खुल जाते हैं।
मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ती से, शनि के क्रन्दन धुल जाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः!

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक–श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-हम लाए हैं तूफान से........

हम आए हैं प्रभु पास में, पूजा रचाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।टेक.।।

केवल जनम मरण में ही, पर्याय बिताई।
कुछ पुण्ययोग से ही, त्रसपर्याय अब पाई।।
शक्ती मिले चिन्तन करें, आतम जगाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।1।।

स्वर्गों के सुख भोगे पशू की, योनि भी पाई।
नरकों में रो रोकर वहाँ की, आयु बिताई।।
नरतन प्रभो सार्थक करूँ, निज शान्ति पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।2।।

सम्यक्त्व की महिमा से, आतम शुद्ध बनाऊँ।
शुभ देव शास्त्र गुरु के प्रति, कर्तव्य निभाऊँ।।
फिर "चन्दनामती" क्रम से, स्वर्ग मोक्ष पाने को।
जयमाल के माध्यम से, निजव्यथा सुनाने को।।3।।

शनिग्रह से मेरी मानसिक, व्यथाएँ बढ़ी हैं।
परिवार में कलह व कष्ट, की ये घड़ी है।।
बस इसलिए तुमसे कहा, संकट मिटाने को।
जयमाल के माध्यम से, निज व्यथा सुनाने को।।4।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारकश्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सोरठा

स्वर्गमोक्षदातार, तीर्थंकर की भक्ति है।
सिद्ध सौख्यसाकार, करती आतमशक्ति है।।

।। इत्याशीर्वादः।।

शनिग्रहारिष्ट निवारक मंत्र

1. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय वरुणयक्ष-बहुरूपिणीयक्षीसहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह! मम (......) दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांतिं च कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। (23000 जाप्य)

2. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

3. ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः। (23000 जाप्य)

शनिग्रहारिष्ट निवारक यंत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९
७	८	९	१	२	३	४	५	६
४	५	६	७	८	९	१	२	३
२	३	१	५	६	४	८	९	७
८	९	७	२	३	१	५	६	४
५	६	४	८	९	७	२	३	१
३	१	२	६	४	५	९	७	८
९	७	८	३	१	२	६	४	५
६	४	५	९	७	८	३	१	२

भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि
राजगृही तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा........

मुनिसुव्रत जन्मस्थली, राजगृही धाम है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।टेक.।।

जिस भूमि को ग्यारह लाख वर्षों, पहले ही यह सौभाग्य मिला।
सोमावती माता के महल में, पूरब दिशा का सूरज खिला।।
सूर्य चमकता है, तीर्थ महकता है, राजगृही के शुभ नाम से।
तीरथ की कीरत अमर, होती है प्रभु नाम से।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।1।।

सबसे प्रथम पूजन में करूँ, आह्वानन व स्थापना तीर्थ की।
सन्निधिकरण से अर्चन करूँ, शुद्धातम की आराधना हेतु ही।
मन में बसा लूँ मैं, प्रभु को बिठा लूँ मैं, हो जाएगा पावन मन मेरा।
तीरथ अरु तीर्थंकरों की, पूजन का फल मान्य है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

तर्ज-जैनधर्म के हीरे मोती........

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु की, जन्मभूमि है राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।
क्षीरोदधि का जल लेकर, जलधारा कर लूँ भक्ति से।
जन्मजरामृत्यू का क्षय हो, प्रगटे आतम शक्ति है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्य मही।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर, जिनवर पद में चर्चन कर लूँ।
भवआतप हो जाय नष्ट, इस हेतु तीर्थ अर्चन कर लूँ।। इसी.।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंजों में ही, गजमोती की कल्पना करूँ।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।। इसी.।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदि पुष्प में ही, मैं दिव्य पुष्प कल्पना करूँ।
कामबाण के नाश हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।। इसी.।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के भोजन की, कल्पना करूँ नैवेद्य बना।
पूजन में वह अर्पण कर, क्षुधरोग विनाशन हो अपना।। इसी.।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ही रत्नों के, दीपक की कल्पना किया।
मोह नाश हेतू आरति कर, तीरथ की अर्चना किया।। इसी.।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप जलाई अग्नी में।
कर्म भस्म करने हेतू, तीरथ की पूजा करनी है।। इसी.।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सुस्वादू फल मैंने, जाने कितने खाये हैं।
शिवफल हेतू अब पूजन में, उन्हें चढ़ाने आये हैं।। इसी.।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! आठों द्रव्यों को, मिला अर्घ्य अर्पण कर लूँ।
पद अनर्घ्य के हेतु ''चन्दनामती'' तीर्थ अर्चन कर लूँ।। इसी.।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गंग नदी की धार का, प्रासुक जल भर लाय।
शांतिधारा मैं करूँ, निज पर को सुखदाय।।10।।

शान्तये शांतिधारा

राजगृही उद्यान के, विविध पुष्प मंगवाय।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जीवन हो सुखदाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

राजगृही तीर्थ के अर्घ्य (रोला छन्द)

श्रावण कृष्णा दूज, राजगृही नगरी में।
सोमावति के गर्भ, आये त्रिभुवनपति हैं।।
मैं भी अर्घ्य चढ़ाय, उस नगरी को पूजूँ।
पाऊँ पद सुखदाय, भवबंधन से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणकपवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैशाख सुमास, की द्वादशि तिथि आई।
मुनिसुव्रत भगवान, जन्मे खुशियाँ छाईं।।
जन्मकल्याण पवित्र, उस नगरी को अर्चन।
कर हो पावन चित्त, राजगृही का वंदन।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणकपवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि वैशाख, को दीक्षा जहाँ धारी।
जातिस्मृति से नाथ, ने सम्पत्ति बिसारी।।
नीलबाग से प्रसिद्ध, था राजगृहि उपवन।
पूजूँ उसको नित्य, खिल जावे मन उपवन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी वदि वैशाख, चंपक तरुतल तिष्ठे।
केवलज्ञान प्रकाश, पाया मुनिसुव्रत ने।।
राजगृही उद्यान, समवसरण से पावन।
पूजूँ जिनवर थान, हो मेरा मन पावन।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक–पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं राजगृहीजन्मभूमिपवित्रीकृत–श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–शेरछन्द –

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।टेक.।।
यूँ तो जगत में जन्मते हैं प्राणि अनन्ते।
मरते हैं प्रतिक्षण भी यहाँ प्राणि अनन्ते।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।1।।
एकेन्द्रि से पंचेन्द्रि तक जो जीव आतमा।
उन सबमें छिपा शक्ति से भगवान आतमा।। हे नाथ.।।2।।
भगवान आतमा प्रगट पुरुषार्थ से होता।
पुरुषार्थ बिना मात्र जग में खाना है गोता।। हे नाथ.।।3।।
तीर्थंकरों का सिद्धपद निश्चित है यद्यपी।
फिर भी तपस्या करके वे पाते हैं शिवगती।।हे नाथ.।।4।।
मैंने भी मनुष जन्म जो पाया अमोल है।
वह मोक्षमार्ग के लिए सचमुच ही मूल है।।हे नाथ.।।5।।
इस काल में निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं है।
पर जन्म सार्थ करने की युक्ति यहीं है।।हे नाथ.।।6।।
पुरुषार्थ के द्वारा प्रथम तो कार्य शुभ करें।
जीवन में सदाचार से सारे अशुभ टलें।।हे नाथ.।।7।।
प्रभु जन्मभूमि अर्चन का अर्थ है यही।
आत्मा में रागद्वेष अल्प होवें शीघ्र ही।।हे नाथ.।।8।।
इस राजगृही में जनम मुनिसुव्रतेश का।
प्रभु वीर की खिरी यहीं पे प्रथम देशना।।हे नाथ.।।9।।
है पंच पहाड़ी में एक विपुलाचल गिरी।
जिस पर बनी रचना है प्रभू गंधकुटी की।।हे नाथ.।।10।।

गणधर सुधर्मा ने यहीं से सिद्धपद लिया।
कुछ मुनि के सिद्धपद से सिद्धक्षेत्र यह हुआ।।हे नाथ.।।11।।
जिननाथ मुनिसुव्रतेश की बड़ी प्रतिमा।
श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा की है महिमा।।हे नाथ.।।12।।
जयमाल में यह अर्घ्य थाल मैं सजा लाया।
अर्पण करूँ अनर्घ्यपद की प्राप्त हो छाया।। हे नाथ.।।13।।
भगवान श्री जिनेन्द्र से विनती यही मेरी।
मिट जावे ''चन्दनामती'' संसार की फेरी।।हे नाथ.।।14।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्यप्राणी मुनिसुव्रत की जन्मभूमी को नमें।
तीर्थेश प्रभु की चरणरज से शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की आरती

-ब्र. कु. इन्दु जैन

तर्ज–जिया बेकरार है...............

मुनिसुव्रत भगवान हैं, सर्वगुणों की खान हैं।
आरति करते जो भविजन, क्रम से पाते निर्वाण हैं।।
मुनिसुव्रत भगवान हैं।।टेक.।।

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, नील प्रभा के धारी हैं।नील........
हे हरिवंश शिरोमणि प्रभुवर, छवि तेरी मनहारी है।छवी......
राजगृही शुभ धाम है, जन्में श्री भगवान हैं।।आरति....।।1।।

पितु सुमित्र जी पिता तुम्हारे, सोमादेवी माता हैं।सोमादेवी......
श्रावण वदी द्वितीया तिथि को, गर्भ बसे जगत्राता हैं।।गर्भ........
इन्द्र करें गुणगान हैं, हुआ गर्भकल्याण है।।आरति....।।2।।

शुभ वैशाख वदी बारस तिथि, जब जिनवर ने जन्म लिया। जब......
अरु वैशाख वदी दशमी तिथि, दीक्षा ले वन गमन किया।।दीक्षा.....
प्रभु महिमा सुखदान है, जाने सकल जहान है।।आरति....।।3।।

थी वैशाख वदी नवमी, केवल रवि किरणें प्रकट हुईं।केवल.......
फाल्गुन कृष्ण सुबारस, गिरि सम्मेदशिखर से मुक्ति मिली।।सम्मेदशिखर...
तीरथराज महान है, प्रभु को हुआ निर्वाण है।।आरति....।।4।।

प्रभू आपकी आरति करके, केवल इक अभिलाष करूँ।।केवल.......
मुक्तिवधू मिल जावे ''इन्दू'', फेर न भव-भव भ्रमण करूँ।। फेर.....
करते जगकल्याण हैं, पावन पूज्य महान हैं।।आरति....।।5।।

राजगृही तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–माई रे माई..............

राजगृही जी तीर्थक्षेत्र की, आरति को हम आए।
आरति के माध्यम से निज में, ज्ञान की ज्योति जलाएँ।।बोलो जय...।।टेक.।।

इसी धरा पर तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जी जन्मे,
माता सोमा के महलों में, रत्न करोड़ों बरसे।
हुए चार कल्याण जहाँ पर.................
हुए चार कल्याण जहाँ पर, उस तीरथ को ध्याएं।।आरति.।।1।।

समवसरण महावीर प्रभू का, विपुलाचल पर आया,
छ्यासठ दिन तक खिरी न वाणी, इन्द्र बहुत अकुलाया।।
इन्द्रभूति ने ज्यों दीक्षा ली..................
इन्द्रभूति ने ज्यों दीक्षा ली, दिव्यध्वनि प्रगटाए।।आरति.।।2।।

राजा श्रेणिक और चेलना रानी हुईं विख्याता।
रथ चलवाया जैनधर्म का फैली थी यशगाथा।।
राजा श्रेणिक वीर प्रभू के ....
राजा श्रेणिक वीर प्रभू के, श्रोता प्रमुख कहाए।।आरति.।।3।।

समवसरण के दर्शन हेतू, चला भक्तिवश मेढ़क।
गज के पैरों तले दबा, और देव बना था तत्क्षण।।
नाना इतिहासों की जननी.................
नाना इतिहासों की जननी, भू को शीश झुकाएं।।आरति.।।4।।

इस नगरी में पंच पहाड़ी, जन-जन का मन हरतीं।
कई मुनी गए मोक्ष जहाँ से, उसकी गाथा कहती।।
जैनीं संस्कृति की दिग्दर्शक.................
जैनी संस्कृति की दिग्दर्शक, हैं इतिहास कथाएं।।आरति.।।5।।

नगरी के गिरिव्रज, वसुमति, कई नाम शास्त्र में माने।
जुड़े कई इतिहास यहाँ से, तीर्थ सुपावन जानें।।
जम्बूस्वामी हुए विरागी....................
जम्बूस्वामी हुए विरागी, केवलिजिन को ध्याएं।।आरति.।।6।।

गणिनी माता ज्ञानमती के, चरण पड़े तीरथ पर।
मुनिसुव्रत प्रभु जन्मभूमि की, कीरत फैली भू पर ।।
तीर्थ ''चंदनामती'' पूज्य.................
तीर्थ ''चंदनामती'' पूज्य, आत्मा को तीर्थ बनाए।।आरति.।।7।।